(2)

उत्तरार्ध कहा गया है। अर्थात् पूर्वार्ध मे तीव्र मध्यम और उत्तरार्ध मे शुद्ध मध्यम (म) का प्रधानता पाई जाती है।

वास्तव मे इस नियम का पालन केवल संधि प्रकाश रागो मे ही पाया जाता है। प्रातः कालीन संधि प्रकाश रागो मे शुद्ध मध्यम तथा सायंकालीन संधि प्रकाश रागों मे तीव्र मध्यम की प्रधानता रहती है। भैरव, कालिंगड़ा, जोगिया आदि प्रातःकालीन रागों मे शुद्ध मध्यम और श्री मारवा, पूरिया आदि संध्या कालीन संधि प्रकाश रागों मे तीव्र मध्यम प्रयोग किया जाता है। अपवाद स्वरूप राग-पूर्वी मे दोनो मध्यम प्रयोग होता है।

और प्रातः कालीन संधि प्रकाश रागों मे जैसे रामकली, ललित आदि।

(5) वादी संवादी स्वर

जिस प्रकार दिन के दो भाग है उसी प्रकार सप्तक को भी दो भागो मे किया गया है, सप्तक के पूर्वांग के और उत्तरांग मे। प्रथम नियम यह है कि जिन राग का वादी स्वर सा रे ग और म स्वरो मे से हो उनका गायन समय दिन को प्रथम भाग मे अर्थात 12 बजे दिन से रात्रि 12 बजे के बीच, तथा जिन रागों का वादि स्वर प, ध, नि, और तार सां मे से है उनका गायन समय दिन के द्वितीय प्रहर अर्थात 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन के बीच।